वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

| Monthly Magazine | Issue 119 | Year 15 | Volume 03 | Aug. 2023 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150 |
|---|---|---|---|---|---|---|

## अपने मन को श्रेय मार्ग पर ही लगायें

सूर्य चन्द्र के स्वस्थी पथ पर हे प्रभु चलते रहें
दानी, ध्यानी, आहिंसक बन सतसंग सदा करते रहें।।

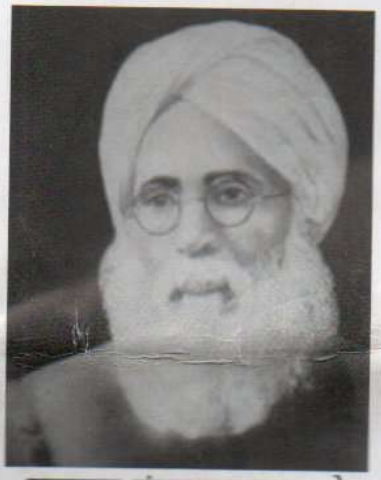

महात्मा हंसराज भारत के महानतम शिक्षा विदितों व समाज सेविकों में एक

यह संदेश ऋग वेद के मन्त्र में है जिसका भाव है कि हे ईश्वर ऐसी कृपा करें कि जैसे सूर्य और चन्द्रमा सारे संसार और प्राणीजगत का कल्याण अपनी किरणों द्वारा करने मे लगे हुये हैं हम भी उसी तरह विना किसी भेद भाव के दूसरों के कल्याण में लगे रहें। यह परोपकार तभी संभव है जब हम दानी वने, आप का ध्यान करके आप के इश्वरीय गुणों को धारण करे, किसी पर किसी भी तरह की हिंसा न करें और इन साधनों द्वारा सतसंग में ही रहें। यहो पर महत्वपूर्ण बात यह है कि जब भी हम कल्याणकारी व परोपकार के मार्ग पर चलने का संकल्प लें तो अपने मन के भेद भाव को भुला दें। यदि परोपकार कार्य करते हुए भी अपने पराए का विचार मन में आ जाता है तो हमारा अच्छा उदेश्य भी दूषित हो जाता है।

May we follow and traverse the path of benevolence like the Sun and the Moon. To do this we may perform charities but at the same time should remain connected with God. Even the charities can lead to arrogance if we do not remain connected with the higher up.

एक बार किसी धनी के पास ऐक व्यक्ति ने नौकरी के लिये प्रार्थना की। घनी व्यक्ति ने उससे पूछा—क्या वेतन लोगे? नौकरी के अभिलाशी ने कहा———मेरा वेतन यही है कि मुझे हर समय काम मिलता रहे। जब तुम मुझे काम नहीं दोगे, मैं

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2022-2024

आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा
15- हनमान रोड
नई दिल्ली- 110001

तुम्हें मार डालूंगा। धनी ने सोचा—— "यह जो बहुत अच्छा सेवक है जो वेतन कुछ भी नहीं मांगता, किन्तु काम हर समय चाहता है और कभी आराम नहीं चाहता। मैने अपने काम के लिये कई आदमी रखे हुये हैं। बहुत सारा वेतन देता हूं। क्यों न इसे ही रख कर बाकीयों को निकाल दिया जाये। इस प्रकार सांचकर धनी व्यक्ति ने उसे नोकरी पर रख लिया।

नौकर काम करने में बहुत तेज था। इधर मुंह से काम का आदेश निकला नही कि कार्य पूरा हो जाता था। उस धनी का पूरे दिन का काम जो कि कई व्यक्ति करते थे, एक घटें में ही पूरा हो जाता पर इस ने घनी कि चिन्ता बहुत बड़ा दी। ——अगर इसे काम न दिया तो यह मुझे मार डालेगा। काम दे तो कहां से रोज इतना काम लायें जो कि इसे पूरा दिन व्यस्त रखे। इस चिंता ने धनी को व्शाकुल कर दियां खान पान सब नीरस हो गया। एक दिन किसी बुद्धिमान व्यक्ति ने उस धनवान से पूछा———इतना धन सम्पति होते हुये भी तुम दतने दुवले कमज़ोर क्यों होते जा रहे हो? धनी ने सारी कथा कह सुनाई। बुद्धिमान ने सोचा और बोला———— तुम इसे केवल अपने ही कामों में क्यों सीमित रखतें हो? इसे मोहल्ले वाले व गांव वालों का काम करने को भी दे दो। इस तरह यह व्यस्त रहेगा और तुम इस के हाथों बचे रहोगे।

यही अवस्था मनुष्य के मन की है। जिस समय इसे शुभ कर्मो से अवकाश मिलेगा, उस समय मनुष्य का मन इधर उधर भागेगा और उस की सोच नाकारात्मक भी बन सकती है जिसके कारण वह नाशकारी कर्मो में लग सकता है। इस से बचने का सब से अच्छा उपाय है कि मनुष्य अपने आप को परोपकारी कार्यों मे लगाये। जब की परोपकारी कार्यो का फल सदैव अच्छा ही होता है बुरे काम करने से दुख और विपतियां ही सामने आती है। परन्तु मनुष्य के अपने काम इतने थोड़े हैं कि उसे वह शिघ्र ही समाप्त कर लेता है और जब उसके पास काम नहीं होता तो उसका मन इधर उधर भागता है।

भगवान रामचन्द्र ने भी हनुमान को यही संदेश दिया था——हे हनुमान इच्छारूपी नदी के दो मार्ग हैं, एक भली इच्छा, दूसरा बुरी इच्छा। जो इव्छा ई,वर आदेश के अनुरूप है वह भली है, जो विरूद्ध है, वह बुरी है। अत- ईश्वर को सर्वत्र विद्यमान जानकर और इस विचार को सामने रखकर कि उसकी आज्ञा के विरूद्ध कार्य करने से दुख भोगना पड़ेगा, व्यक्ति को दुसरों की भलाई जिसे परोपकार कहा गया है, करने चाहिये।

जो लोग परोपकार के कार्य करते हैं वे सदा खुश रहते है। जब तक प्राण हैं, व्यक्ति परोपकार के कार्यो में ही लगा रहे। खासकर इस बात को ध्यान में रखते हुये कि मनुष्य जीवन बहुत मूल्यवान है, मुश्किल से प्राप्त होता है और फिर से मनुष्य चोला तभी मिलेगा अगर हमारे कर्म अच्छे होंगें अर्थात हम परोपकार के कामों में ही इस जीवन को लगाये रखेंगे। जो शुभ कर्म दूसरों की भलाई के लिये किये जाते हैं, वे कभी बन्धन का कारण नहीं बनेगें अर्थात मुक्ति और परम आन्नद के अधिकारी बनेंगे

Single minded pursuit of money impoverishes the mind, shrivels the imagination and desiccates the heart.

**एक संकलप**

हम अपनी कमाई पवित्र रखेगें। जब आप ऐसा करते हैं तो घर, समाज और देश में सुख शांति रहती है। जब आप गलत ढ़ग से आ रहे धन को ठुकराने का साहस ले आते हैं तो आप सही अर्थो में योगी बन जाते हैं।

# WANTED BRIDE

***Qualified employed match for Arora boy 22.2.95 2.00 am Jalandar, Ht 5'-8', B.Tech. Hons M. Tech. (IIT Jodhpur) in Mech job in MNC Gurugaon, pkg 13 Lac. WhatsApp Mob. 83605-36336***

शिमला का **SHARDA**

# कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381


# पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।
या **Google Pay No. 9465680686** या **Paytm No. 9465680686**

# Balance Growth in Life is Above Materialistic Achievements

Neela Sood

Recently when I was in my brother's place at Delhi, they received the shocking news of the demise of a nine years old boy in their neighborhood. I also accompanied them to express condolences. After reaching there, what I learnt left me in pain. Only the old couple lived in the house and their grandson who had passed away was living with his parents in a different flat in the same locality.

Boy's parents were working. Boy remained sick for a couple of days but was under the care of the whole time maid since mother was finding it difficult to take leave. This story threw up many such harsh realities which according to me were unthinkable about thirty years back.

It is a fact that most of us in the rat race to attain our materialistic pursuits have lost a sense of balancing among spiritual, physical and materialistic advancement and in the process have tragically trapped ourselves. We seem to have less time at our disposal to think about what we are doing and what will be its consequences..

The Gita says that Yoga is all about balance in life. One is required to perform all his duties- as the life partner to his wife or husband, as the dutiful son, as the earning householder, as a selfless friend, as a responsible subject/ citizen and a caring neighbour etc. all in appropriate proportion. So much is the importance of balancing in life that even if one Chooses to chase the blessings of Almighty by ignoring our duties in this in the workaday world, he will not get the much cherished salvation -supreme happiness.

Vedas by dividing life into four phases ie brahmacharya, Grihastha, sanyas and vanprastha emphasize the need for a balance in life. Similarly Buddha says that the best way to practice Buddhism is by performing one's duties towards parents, wife, children, neighbours, guru & seers and social groups.

In ancient India the individual was encouraged to live in harmony with himself, his family, his environment and community by bringing about a balance between his inner self and the outer environment. Growing conflicts, struggle to survive, broken homes, youth going astray, addictions, crimes and suicides all what we are seeing today even in the homes which are rolling in wealth is because of the fact that we are not maintaining the balance what we are required to do.

How to restore this balance? Spend some time with your loved ones, because they are not going to be around forever. By the time we realize that our parents needed us by their side, they are no more.

Say a kind word to someone who looks up to you for everything in his early days, because that little person soon will grow up and leave your side. Even with your entire accumulated wealth you can not buy back the childhood of your child. Therefore give him time and attention even if it is at the expense of so many other things which your bigger pay package can buy.

# असली मित्र कोन है ?

नीला सूद

एक बार एक अच्छा व्यक्ति निर्दोष होने के बावजूद अदालत में दोषी होने के कगार पर आ गया। उसके वकील ने उसे कहा कि अदालतें तो सबूत व गवाह मांगती है। अगर तुम्हारे पास गवाह है तभी बचाव हो सकता है।

उस व्यक्ति के तीन बहुत घनिष्ठ मित्र थे, जिन पर उसे बहुत भरोसा था । पहले वह उस के पास गया, जिसे वह सब से घनिष्ठ मानता था, उसने कुछ हमदर्दी के शव्द कहकर अपना पीछा छुड़वाया। जब दूसरे के पास गया तो उसने कहा––मित्र अगर कुछ धन चाहिये तो मैं दे सकता हूं पर इन कोर्ट कचहरी के चक्करों में नहीं पड़ना चाहता। हताश वह आखीरकार तीसरे मित्र के पास गया। उसने बात सुनी तो खुशी से न्यायधीश के पास गवाह बनकर जाने को तैयार हो गया।

इसी तरह, हम भी अपनी ज़िन्दगी में अपने तीन मित्रों पर बहुत भरोसा कर के चलते हैं। सब से बड़ा मित्र हम अपनी जायदाद व धन दौलत को मानते हैं पर यह मित्र न तो हमें मृत्यु से बचा सकता है और न ही जब बुढ़ापे के कारण अंग काम करने बन्द कर देते है तब सहायक होता है। हमारे सगे सम्बन्धी हमारे दूसरे मित्र की तरह हैं, वे शमशान भूमी तक ही साथ चलेगें। हमारे तीसरे मित्र हैं, अच्छे कर्म जो कि मृत्यु के पश्चात भी हमारे साथ रहकर हमारे अगले जन्म को सुधारेगें।

हम पुराणों में पढ़ते है कि धर्मराज ने हमारे अच्छे व बुरे कर्मो का खाता रखा होता है, यदि अच्छे कर्म बुरे कर्मो से अधिक हों तो मानव योनी मिलती है वरना बाकी 1,86000 में से किसी एक योनी में, हमारे कर्मो के अनुसार जन्म होता है। चाहे यह 186000 योनीयों की बात केवल ऐक ढकोंसला हो पर जो बात सीखने वाली है वह यह है कि मनुष्य योनी बहुत कीमती है व यह तभी नसीब होती है जब हमारे कर्म अच्छे होंगे। यही नहीं अगर कर्म अच्छे नही तो मानव का चोला पाकर भी हम अपने खराब कर्म को भोग कर दुख पायेंगे। क्योंकि कर्म तो भोग कर ही खत्म होते हैं।

श्रेष्ठ कर्म करते हुए जीने की इच्छा करना भारतीय जीवन दर्शन है। ' कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेत' हे मनुष्यो ! पुरूशार्थी और कर्मशील बनो।
जहा अच्छें कर्मो से मनुष्य देवता बनता है, वही बुरें कर्मो से मनुष्य राक्षस बन जाता है। यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है वैसा काटता है। जैसा बीज वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव कर्मानुसार जगत में आता है और उसी के अनुसार फल भोगकर चला जाता है। अकेला आता है और अकेला ही चला जाता है। जो इन्सान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति,आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।

**M. : 9465680686**

हमने कर्म कैसे किये इसका मूल्यांकन तो हम खुद कर सकते हैं। प्रार्थना करते समय अपने कर्मो का मूल्यांकन करे या रात को सोने से पहले बिस्तर पर बैठ कर पांच मिन्ट के लिये सोचिये आज का दिन कैसा बीता। हमने अपने आप से दो प्रश्न पूछने हैं। पहला––क्या मैने कोई ऐसा कार्य तो नहीं किया जिससे दूसरे के मन को ठेस पहुंची हो? दूसरा–––क्या मैने कोई ऐसा कार्य किया जिससे दूसरे का जीवन बेहतर हो गया हो?

किसी सन्त से मैने उपदेश में सुना था कि हम मनुष्यों को तीन श्रेणीयों में बांट सकते हैं। पहली श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो अपने को कष्ट में डाल कर भी दूसरों को सुख पहुंचाते हैं। इन्हे हम देवता कहते हैं। दूसरी श्रेणी में वे आते हैं जो काम करते हुये यह ध्यान रखते हैं कि हमारे कार्य से दूसरे को कष्ट न हो––मेरा भी कल्याण दूसरे का भी कल्याण। हां इस श्रेणी के व्यक्ति जिन्हे 'मनुष्य कहा गया है देवताओं की तरह दूसरों को सुख पहुंचाने के लिये अपने को कष्ट में नहीं डालते।
तीसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो दूसरों को दुख पहुंचाने के लिये व दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिये, अपना खुद का नुकसान करने में भी परहेज़ नहीं करते। ऐसे लोगों को असुर कहा गया है।

आगे उन सन्त ने कहा–– देवता बनना आसान नहीं पर हम मनुष्य बनें और असुर कभी न बने।

मनुष्य कैसे बने?– आदमी दुनियां के कामों को करते हुए अपने जीवन को दीन–दुखियों की सेवा में लगाए, मानवता के हर एक काम को करते हुए गौरव अनुभव करें। ईश्वर महान–दयालु है, इस लिए सच्चा ईश्वर भक्त बनने के लिये हर रोज कुछ न कुछ दया का काम करना चाहिए। जब आदमी दया–क्षमा–प्यार–नम्रता आदि गुणों से अपने जीवन को भर लेता है, तब मन शान्ति से भर जाता है और इस प्रकार मानव को अनुभव होता है कि जीवन का हर पल संगीत की तरह आनन्दमय बन गया है। परोपकार ईश्वर–भक्ति का ओर ले जाने वाले साधन है।

जिस प्रकार सूरज प्रकाश फैलाकर उष्मा देकर सब का कल्याण कर रहा है,, फूल खुशबू फैला कर सब के मन को उल्लास से भर देता है, इसी प्रकार हम भी मानव बनकर इन्सानियत फैलाऐं। यही ईश्वर भक्ति है व यही असल कमाई है।

✪☆✪

# पुस्तक

## (English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रूपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रू भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।
कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,
पुस्तक ईगलिश भाषा में है।
पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

**नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381**

**पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है**
**न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।**

# What is enlightenment?

**Bhartendu Sood**

**Sri Aurobindo**

Enlightenment is to know self by attainig true Knowledge. Enlightenment is to create a mind without any fear. Knowledge is opposite of ignorance. Ignorance can be removed by self-learning, by being aware all the time, by using the intellect to the core, by seeking, by query, by being guided and finally by the blessings of the one who is already enlightened (in other words, the guru). By relying upon Guru or blindly following the Guru, one can't become enlightened. To become enlightened, he has to be a thinker and seeker.

This is a slow process when one moves from one level of consciousness to another. A small aperture through which light of knowledge enters expands suddenly and becomes a door through which it is possible to witness a person becoming wiser, perhaps a superhuman, offering a view of him never seen before. This is something which suddenly becomes live, ready to talk to self. It takes one through depths of wisdom, love, compassion and benevolence. It reveals secrets of the universe and humanity, and truths of life and right way to live it and in the end embrace the death as happily as he enjoyed any other event of his life. The negatives in one die and positives start growing. The mind is without any jealousy, crookedness, over ambition, hatreadness, arrogance, greed, attachment, lust and such other negativity of mind which one experiences in this mundane world. One's perception of family and country changes completely. He comes out of the narrow considerations of origin, language, race, caste, gender, religion and so many others which act as a wall between one man and the other. For him world is one family and entire humanity forms its members in the spirit of vasudhevay katumbakam. He comes to know that life lived with others is life. The one who is teaching how to be Hindu or Muslim can't be an elightened soul but the one who teaches how to be human is an elightened soul.

When one gets enlightened, it conveys that the seed of knowledge has been sown in him; the idea of knowledge has taken shape in womb of his mind. Now this seed has to grow in to a tree which is capable of giving shade and fruit to everybody." This is the real purpose of enlightenment.

A lit candle lights another candle. Similarly, only an enlightened person can enlighten another person. There is no other way. Fired by curocity to know the truth, enlightenment is exponential and involves experimenting. There is no text book for it. Without an urge to know the truth, even Vedas can't give you enlightenment. There are many who have read Vedas many a times but are devoid of true enlightenment. They are good so far so to give discourses only. The real fruit of enlightenment is the removal of ignorance and fear, which is a great gift. Enlightened person has no fear. He had learnt to embrace death happily. He will speak only truth and nothing except truth. At the spiritual level too, the more we shed our ignorance about who we are and our constitutional position in this universe, the closer we come to God, who is full and eternal enlightenment.

Last, enlightenment has no meaning if it is not used to enlighten other people. Then it ia oak tree which is huge but neither gives shade nor bears fruit. Light of knowledge has to be dispersed. It is incumbent upon the enlightened being to guide others selflessly. Whether Socrates, Buddha, Guru Nanak Dev or Maharishi Daynand, they were the true embodiment of enlightened souls and used their knowledge so obtained from enlightenment to remove the ignorance of others. Guru Nanak Dev when met Sidhas, he said, "Your being enlightened is all waste if you do not use it to enlighten others" **This is why, in one of the principles of Arya Samaj, Maharishi Dayanand said-----"Remove ignorance ( avidya) and promote knowledge( Vidya) by enlightening otheres. This is true enlightenment.**

# सध्या में कैसे ईश्वर के स्वरूप का ध्यान करते है।

संध्या करते हुए हम ओम भूः, **ओम भुवः, ओम स्वः,** ओम महः, ओम जनः, **ओम तपः, ओम सत्यमः** का उच्चारण करते हैं। यह ईश्वर के स्वरूप का ध्यान करने के लिए बोला जाता है।

**ओम भूः**

हे सर्व रक्षक जगदीश्वर आप समस्त जगत के उत्पातिकर्ता हैं तथा सब के प्राण स्वरूप है। मेरी यह प्रार्थाना है कि अपने प्राणों में आपको धारण करूं।

**ओम भुवः**

हे परमेश्वर आप सब प्राणियों के दुखविनाशक हैं। मैं आप के संरक्षण में रहकर दुखों से दूर हो जाउं।

**ओम स्वः**

हे परमेश्वर आप सुखस्वरूप है। मैं भी आप की शरण में आकर सुखी हो जाउं।

**ओम महः**

हे परमेश्वर आप अपने गुण कर्मो द्वारा सब से महान है। मैं भी आप की शरण में आकर आपके अुण कर्मो को ग्रहण करूं

**ओम जनः**

हे परमेश्वर आप समस्त जगत के पिता हैं, अर्थात पैदा करने वाले है। मैं आप की शरण में वैसे ही रहूं जैसे बालक आने आप को पिता की शरण में महसूस करता है।

**ओम तपः**

हे परमेश्वर आप तपस्वी हैं। मैं भी दुख.– सुख, मानापमान मे एक जैसा रहने की तपस्या करूं।

**ओम सत्यमः**

हे परमेश्वर आप सत्यस्वरूप हैं। मैं भी जीवन में सत्य के मार्ग पर चलूं और मेरा जीवन सत्य से परिपूर्ण हो, ऐसी मुझ पर कृपा करें।

## सम्पादकिय

# क्या लोकतन्त्र के नाम पर हमें इस अनैतिक राजनिती का हिस्सा बनना ही पड़ेगा?

यदि माहराष्टर की राजनैतिक घटनाए एक ईशारा भेज रही हैं तो वह यह है कि हम भारतीय लोकतन्त्र के लोगों को, जिसे कि हमारे प्रधानमन्त्री ने हाल में ही दुनिया के सभी लोकतन्त्रों की मां बताया, मूल्य वहीन राजनिती का हिस्सा बनना ही पड़ेगा। सब से हैरान करने वाली बात यह है कि जितने भी राजनिती पर लिखने वाले हैं या फिर समाचार पत्रों के सम्पादक है, किसी ने भी जो कुछ भी हुआ उसकी भत्सर्ना नहीं कि, उन्होने इस बात को ही उजागर किया कि इस उल्ट फेर सें किस राजनैतिक पार्टी को कितना फायदा या नुकसान होगा। अर्थात यह अनैतिक व भददी राजनिती तो अब लोकतन्त्र का हिस्सा है। आप वोट कांग्रेस के विरूद्ध भाजपा को दें और हैरान न हों यदि शपथ लेने वाले दिन चुना हुआ सदस्य कांग्रेस की तरफ से शपथ ले रहा है।हम टी वी की चर्चाओं में तो इस की उमीद ही नहीं करते कि ऐसी राजनिती की भर्तसना की जाएगी क्योंकि पिछले कुछ वर्षो में हमारा ईलैक्टरोनिक मिडिया मसालेदार चर्चाओं के लिए जाना जाने लगा है, निडर होकर बात कहने वाले रहे ही नहीं।।

भारतीय जनता पार्टी, जिसे भाजपा कहा जाता है, उसका जन्म मेरे सामने ही हुआ और मैने उसे शिशुकाल से आगे बड़ते देखा है। यह भी सत्य है कि मेरी हमदर्दी व लगााव इस पार्टी के साथ रहा । इसके दो तीन कारण थे। पहला उस समय कांग्रेस का राज था व राजनिती पर पूरा दबदवा था। बाकी दल उसके सामने कुछ भी नहीं थे। लम्बे समय से राज का सुख भोगने के कारण पार्टी में बहुत सी बुराईयां आ गई थी। भ्रष्टाचार को लोकतन्त्र व शासन प्रणाली का हिस्सा मानना जिसमें मुख्य था। दूसरा, कांग्रेस पार्टी लोकतन्त्र के मूल्यों को भूलती जा रही थी। व्यक्ति पूजा उस में घर कर गई थी, जिसका मुख्य कारण यह था कि तत्काल प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाांधी का कद अपनी पार्टी के ही बड़े सिंडीकेट को मात दे कर व 1971 की लड़ाई में पाकिस्तान के टुकड़े कर बंगलादेश एक नया देश बना देना जैसे बड़े कारनामें करने के बाद, बहुत उंचा हो गया था। यहां तक कि विपक्ष भी मान चुका था कि इन्दिरा गांधी को हराना लगभग असम्भव है। इन्दिरा गांधी प्रभाव उतर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम तक ऐक जैसा था। आंघरा प्रदेश के लोग भी चाहे हिन्दु हो या मुसलमान वैसे ही वोट उालते थे जैसे कि आसाम या पंजाब के सिक्ख। अटल विहारी जी ने भी उसे मां दुर्गा की उपाधी दे की थी। यह मान लिया गया था कि नेहरू इन्दिरा गांधी परिवार ही भारत पर राज करने का हक दार है। चुनाव तो ओपचारिकता बन गए थे। परन्तु उस समय हिन्दुत्व का कोई मुददा नहीं था।

**कल तक भाजपा ने जिस व्यक्ति पर भ्रष्टाचार के अरोप लगाए थे उसी को मन्त्रीमण्डल में उप मुख्यमन्त्री वना दिया**

इसके विपरीत जनसंघ जो कि भाजपा का पहले नाम था, कुछ मूल्यों पर आधारित नई व बहुत छोटा दल था, जिसका प्रभाव दिल्ली, पंजाब व हिमाचल व कुछ हद तक उतर प्रदेश तक ही सीमित था। जो भी इसके नेता थे वे त्याग व सादगी का जीवन जीते थे। कुछ असूलों पर चलने वाले थे उस में ईमानदारी व नैतिकता मुख्य था। यह बात उपर से नीचे तक थी। दीन दयाल उपाध्याय, अटल बिहारी बाजपाई, लालकृष्ण अडवाणी, बलराज मधोंक, उनके शीर्श नेता ऐसे जीवन के लिए मशहूर थे।

मुझे याद आती है 1972 के चुनावों की। हिमाचल प्रदेश विधान सभा के चुनावों मे जनसंघ ने 68 में से 5 सीटें जीत कर अपना नाम दर्ज किया। उनमें शिमला विधानसभा क्षेत्र से जीतने वाले थे श्री दौलतराम चौहान। वह आर्य समाजी थे व शिमला आर्य समाज में पुरोहित भी रह चुके थे इसलिए मेरे पिता जी के मित्र थे। चुनाव लड़ने के लिए उनके पास कोई पैसा नहीं था। शुभ चिन्तको ने ही थोड़ बहुत खर्चा किया था। भाजपा हाईकमांड भी ऐसे व्यक्तियों को ही टिकट देती थी। कांगड़ा से चुनाव जीतने वाले कंवर दुर्गा चन्द उन से भी गरीब थे।

वह जमाना धूस का नहीं पर लिहाज का था। जब श्री दौलतराम चौहान विधान सभा सदस्य बन गए तो उनके जानने वाले उनके पास काम के लिए जाने लगे। परन्तु वह असुलों के बहुत पक्के थे। जो काम कायदे कानून के अनुसार नहीं होता उसे " असम्भव " कह कर बापिस भेज देते। हाल यह पहुंच गया कि लोगों ने उनका नाम ही "असम्भव" रख दिया। परन्तु उन्होने अपने असूल नहीं बदले।

1977 में इन्दिरा गाांधी को हैराने के लिए सभी विपक्षी दलों ने जनता पार्टी का गठन किया । परिणाम स्वरूप जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया। परन्तु जनता दल में आपसी कलह के कारण 1980 में जनसंघ ने भाजपा के रूप मे पुनरजन्म लिया। 1984 के संसद चुनाव में भाजपा के हिस्से केवल दों सीटे आई राजीव गांधी 400 से भी अधिक सीटें जीतकर प्रधानमन्त्री बने परन्तु उनके पास अनुभव नहीं था। मुसलमान तुष्टीकरण में उलझ गए। श्री लालकृष्ण अडवाणी के साहस और दूरद्रशिता ने रामजन्मभूमी का मुददा खड़ा कर दिया। लोगों ने साथ दिया व 1989 के चुनसव भाजपा 87 सीटे जीतकर लोकसभा में एक बड़े दल के रूप में उभरी। मेरी राय में भाजपा को जीवित कर कांग्रेस की टक्कर की पार्टी बनाने में जिस व्यक्ति का सब से बड़ा हाथ है वह श्री लालकृष्ण आडवानी।

भाजपा ने उतर प्रदेश जैसे बड़े प्रांत में सरकार बनाई और अगले 10 साल में दूसरे दलों के सहयोग से केन्द्र में दो बार सरकार बनाई। दूसरी सरकार पूरे समय तक रही परन्तु अब र्शीश नेता बूढ़े हो गए थे व शासन की डोर प्रमोद महाजन जैसे नवयुवकों के पास आ गई थी जो कि जहां तक मूल्यों की बात है कांग्रेस पार्टी का रास्ता अख्तयार कर चुके थे।

2014 में श्री नरेन्दर मोदी ने मनमोहन सिंह सरकार के 10 साल के शासन के दौरान कांग्रेस में फैले भ्रष्टाचार को मुददा बना का चुनाब जीत लिया। उसके बाद कांग्रेस का नेतृत्व के आभाव में लगातार पतन जारी रहा। जब कि भाजपा सुदृड़ होती गई। दक्षिण के प्रांतो, उड़ीसा व बंगाल में बहुत प्रयत्नों के बाद भी भाजपा स्थान न बना जब कि राजस्थान, छतिसगढ़ में कांग्रेस के स्थानिय नेताओं का दबदवा बरकरार है। बिहार में नितीश व महाराष्टर में शिवसेना द्वारा साथ छोड़ने के साथ कर्नाटक, हिमाचल व पंजाब की हार के बाद भाजपा की चिन्ताए बड़ना स्वभाविक हैं । परन्तु इसका अर्थ यह नहीं सता में बने रहने के लिए वही हथकंडे अपनाए जाऐं जिसका वह किसी जमाने में विरोद्व करती थी। माहराष्टर की राजनैतिक घटनाओं ने पुराने भाजपा के शुभचिन्तको को बहुत निराश किया है।

यह सच्चाई है कि एक बार गददी मिलने के बाद कोई भी छोड़ना नहीं चाहता । यह श्री नरेन्दर मोदी के साथ भी उतना ही सत्य है। वह अपने लिए तीसरी टरम चाहते हैं परत्तु सोचना यह है कि यदि इन हथकण्डों के बाद तीसरी बार प्रधानमन्त्री बन भी गए परन्तु इस सब के बाद भाजपा का भविष्य क्या है। फिर पार्टी में कांग्रेस से आए नेताओं का वर्चस्व हो गया तो ओं कुछ भी हो सकता है।भाजपा नेताओं का दल था व इस के नेता एक समय में बहुत निडर व स्पष्टवादी होते थे परन्तु आज लगता ही नहीं कि श्री मोदी व शाह को छोड़कर कोई नेता है। हां उतर प्रदेश में श्री योगी वैसे ही नेता है परन्तु वह अपने कार्य में व अपने प्रान्त में ही व्यस्त है और शायद उस से बाहर आना भी नहीं चाहते।

मेरा मानना है कि जब एक अच्छा व्यक्ति अपनी उन अच्छाईयों को छोड़ देता है जिन के कारण वह उपर उठठा होता है तो लोगों को उस से उस व्यक्ति की अपेक्षा जो बुरा था, निराशा अधिक होती है, इसी कारण से कोई हैरानगी नहीं होगी यदि 2024 में लोग दूसरे दलों की और झुकते नजर आंए इसका खमयाजा भाजपा को भुगतना पड़े। भाजपा के पुराने नेताओं को गुजरात लोवी के विरूद्व आवाज उठानी होगी तभी भाजपा का उद्धार है वरना यदि 454 सीट जीतने वाली कांग्रेस खत्म हो सकती है तो भाजपा तो कुछ भी नहीं।

# मित्र कैसा हो ?

## मनमोहन आर्य के लेख से

**हमारे शास्त्र कहते हैं**—— जैसे हाथ शरीर की और पलकें आखों की रक्षा करती हैं ऐसे ही जो बिना किसी अपेक्षा के रक्षा करे उसे मित्र कहते हैं। पवित्र आचरण, मित्र के लिये त्याग की भावना, मित्र के सुख दुख और लाभ हानी में एक जैसा ही व्यवहार रखना, मित्र के साथ सदैव सत्य का ही आचरण रखना, ये अव्दे मित्र के गुण हैं।

गलत लोगों की मित्रता प्रातः काल की छाया के सामान होती है जो पहले लम्बी और जैसे दिन बीतता है छोटी होती जाती है। इसके विपरीत अच्छे लोगों की मित्रता सांयकाल की छाया के सामान होती है जो प्रारम्भ में छोटी और सूर्यास्त के बाद लम्बी हो जाती है। किसी ने सत्य कहा है जब सारे लोग साथ छोड़ जाते हैं तो मित्र सहारा देता है।

**यजुर्वेद 36/18 मन्त्र दृते दृम्ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।)**

यजुर्वेद का यह मन्त्र मित्र कैसा हो'' का वर्णन कर रहा है। इस मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना व विनय की गई है कि हे भगवन् मुझे स्थिर न रखकर गतिशील रखिये, क्रियाशील रखते हुए मुझे विद्या, सत्य, धर्म आदि शुभगुणों से परिपूर्ण करो। मुझको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि तथा विद्या–विज्ञान आदि दान से अत्यन्त बढ़ाओं, मुझे सब प्राणी मित्र की दृष्टि से देखें, सब मेरे मित्र हो जाये, कोई मुझसे किंचिनमात्र भी वैर–दृष्टि न करें। मैं निर्वैर हो कर सब प्राणी और अप्राणी चराचर जगत् को मित्र की दृष्टि से अपनी आत्मा के समान, स्वप्राणवत् प्रिय जानू । वेदों में ईश्वर ने उपदेश दिया है कि वह सभी प्राणियों का मित्र है और उसका अनुकरण कर सब प्राणियों को एक दूसरे का मित्र बनना चाहिये। अन्याय से वशीभूत हो कर किसी के साथ वर्ताव न करूं। मित्र बनने व मित्र बनाने के लिए जो बात साथ देती है वह है कि हम किसी को भी क्ष भाव से न देखें और हमारा व्यवहार न्यायपूर्ण हो

ऋग्वेद के एक मन्त्र "इन्द्रस्य युज्यः सखा" में ईश्वर को सखा कहकर उसे मनुष्य आदि प्राणियों का सच्चा व योग्य मित्र कहा गया है। ईश्वर से बढ़कर मनुष्य व अन्य प्राणियों का कोई मित्र नहीं है। मित्रता व दोस्ती से सभी को लाभ होता है व शत्रुता से सभी को हानि होती है। अतः हमें सबसे मित्रता करनी चाहिये और शत्रुओं को भी यदि मित्र बनाया जा सकता हो तो बनाना चाहिये। इतिहास में राम व सुग्रीव, कृष्ण–सुदामा तथा राम–विभीषण की मित्रता के उदाहरण से स्पष्ट है कि दो व्यक्तियों की मित्रता से दोनों को लाभ होता है। मित्रता सत्य व्यवहार का प्रतीक है और शत्रुता असत्य व्यवहार का। सभी मनुष्यों को प्रतिदिन आत्म चिन्तन करना चाहिये और अपने हृदय से असत्य व शत्रुता के भावों को निकाल कर उनके स्थान पर प्रेम व मित्रता का भाव पैदा करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये।

दूसरे के काम आना व सहयोग भी मित्रता को पैदा करता है। आप ने देखा होगा कि जिस व्यक्ति का दूसरों की मुश्किल समय में सहायता करना आदल बन गई होती है उस के मित्र बहुत होतें है। परन्तु दूसरों की सहायता तभी सम्भव है यदि हम कुछ त्याग करने के लिए तैयार हो। जो त्याग करना सीख जाता है वह सब का दिल जीत जाता है और यही मित्र बनाने में सहायक है।

**१. सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणेमि वः । अन्योः अन्यमसि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। अर्थव ३.३०.१**

है हमारा प्यार बिल्कुल निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पण के साथ होना चाहिए । प्यार में कोई स्वार्थ की भावना, शर्त वा पूर्वाग्रह नहीं हो सकती अगर है तो वह प्यार नहीं व्यापार है ।

# Prayer is the best therapy

**Bhartendu Sood**

All of us face upheavals in life. There comes a time when one feels totally shattered, beleaguered and broken. Generally in such situations we are overtaken by anxiety and fear and crave to know when the time would change. We turn to the fortune tellers, tantricks, tricksters, pundits and other conmen. What is most paradoxical is that this behavior is not only confined to the illiterate but highly educated people too frantically look for a magic band or talisman to come out of the crises and their eyes open when incalculable harm is already done.

Recently I visited Amritsar where I was employed at one time. During normal enquiries about the old colleagues I was shocked when I was told that a staff cadre woman employee when developed a terminal disease married off her beautiful daughter to an aged tantrick on being assured by him that the wedlock would relieve her of that disease. The girl emotionally became ready to make sacrifice for her mother whose father found her wife' life more valuable to him than the future of his daughter. In the absence of right medication that woman died before time and the tantrick disappeared after leaving her daughter high and dry.

Why should it happen? There are two reasons. First, our failure to appreciate that the life is a mixed bag of good and unfortunate happenings and it is true for everybody whether a king or a pauper. Each day is followed by the night but then night has also its duration. We fail to exercise patience, tolerance and the resistance in such moments of crises. Our mind is so closed that it looks at only closed doors though there are many doors which are open also. We don't look at those countless instances of the persons who after being in similar situations reemerged as a phoenix from the ash. Second reason is that we don't keep in mind that we are governed by the law of karma. We can't escape fruit of our deeds in this life and the previous life. Even the men of god like Rama and Sita had to spend fourteen years in exile despite being perceived as the rightful inheritor of the throne of Ayodhya.

What should be done under such situations? There is an urgent need to realize that God is great and there is no better resolver than Him. His ways and means to solve our problems are generally beyond our comprehension. Therefore the best therapy is to have belief in God, pray to Him. No other talisman gives as much strength as the honest and sincere prayer to the Almighty. But it has to be accompanied by the right line of action also. For example, it is the prayer which gives strength and shows the way but cancer can not be cured unless we do right medication in the hands of the qualified doctor.

# Home is the best place but don't cage yourself in it

**Bhartendu Sood**

**100 Years old Henry Kissinger on his 100th visit to China**

They say east, wes, home is best. This proverb expresses the belief that no matter where you go in the world, home is the best place to be. In the Panjabi dialect it is expressed as Jo sukh chhajjo de chabaare oh na bulkh te bukhaare. As we start getting old our love for our home starts multiplying Reason being, we humans love familiarity and don't always embrace change. Moreover, over the years of staying in our home, we create the systems and facilities as per our liking and slowly become accustomed to that. There is safety at home. But, still it is sickening, physically as well as mentally, to remain glued to home. There is a thrill in being away from your home for a part of the day.

Last week I visited our area Community centre to deposit property tax. As I was filling up my form, a migrant came to me with a request, " Uncle ji, will you please fill up our Aadhar form" " Surely, but let me first complete my work.." I told her.

By the time I was back from the counter, two females and one boy were already there with the hope that I'd not disappoint them. I completed the forms of the two ladies. Now it was the turn of the 13 years old boy, "Strange! You can't even write your name and mobile number. Are you not attending school?" I asked, looking at his face with disbelief. Boy remained silent but his mother standing by his side said, "What can we do? We tried our level best that he goes to school but he fell in bad company" "But, it is not late even now. Send him to an evening school. You can take my number. If the Headmaster refuses, call me I will go with you" I advised. After spending about an hour with them I wanted to take leave as I had given time to a friend. But, by that time I had another seven persons surrounding me who were making fervent appeals that I should fill up their forms as well. Musing, while walking home, "There is a job for every retired person if he is interested. Only thing we require is to leave our homes and reach the people and divert our attention from our own children to these companions of ours, around us.

The harsh reality is that for 90% of Indians, life revolves around their children and continues till we don't say good bye to this world. For most of the time we are thinking about our children irrespective of where he or she is. Home may be the best place but if we cage ourselves in its four walls, it can leave us glum and depressed. Constantly gazing at the walls of the house can radiate despair whereas the splendour of nature and the people we meet in the open, bring liveliness and freshness in our lives. The Best thing about the elderly people in Europe and other western countries is that they use all their resources at their disposal to make their old age comfortable. They do not sit at home, come out smartly dressed and enjoy their time in the parks and restaurants. Those who have physical disabilities would try to make up by getting a suitable aid like wheel chair etc.

But this is possible only when we change our attitude to life and children. First, we should not live imprisoned in the glamour and status of the job we had before retirement. Earlier we free ourselves the better it is for our happiness. We will do well to understand that people bow to the chair and not to a man unless one is a celebrity. Second, we should live our own lives and let our children live their own lives. Why should I bother if my child doesn't not have his own house? I should create my own family in this new phase of life and in a new environment. Family comprises the people who are around us not the ones staying in America or Canada, even if they are our blood relations. Love begets love. When I do something good for the other he will also be drawn to me and this is how a relationship develops.

# करणीय व अकरणीय में अंतर जाने बिना असंभव है समय का सदुपयोग

सीताराम गुप्ता

आप समय का सही उपयोग करते हैं और एक पल का भी दुरुपयोग नहीं करते तो ये बहुत ही अच्छी बात है। इससे आपको निष्चित रूप से लाभ ही होता होगा। लेकिन यह भी विचारणीय है कि ये लाभ आपको किस रूप में मिल रहा है? क्या पैसे के रूप में, स्वास्थ्य के रूप में, संबंधों के रूप में या अन्य किसी रूप में? यदि आप चौबीसों घंटे काम में लगे रहकर समय का पूरा उपयोग करते हैं, न दिन देखते हैं और न रात, न सर्दी, न गर्मी, न बरसात और इस समय के सदुपयोग के चक्कर में अपना स्वास्थ्य गँवा बैठते हैं तो यह तो कोई विषेश उपलब्धि नहीं हुई। जब कोई विषेश उपलब्धि ही नहीं हुई तो इसे समय का सदुपयोग कैसे कहा जा सकता है? समय का तथाकथित सदुपयोग यदि आपके स्वास्थ्य, पारिवारिक संबंध, मित्रता, नैतिकता, राश्ट्रीयता अथवा व्यक्तित्व की क़ीमत चुका कर हो रहा है तो आप बहुत बड़े घाटे में जा रहे हैं। मान लीजिए आपने केवल अच्छे और उपयोगी कार्य ही किए लेकिन क्या उनसे आपके जीवन में कुछ सकारात्मक परिवर्तन आया? यदि नहीं तो जो भी किया गया वह समय का सदुपयोग नहीं माना जा सकता।

आपको लिखने–पढ़ने का षौक है अच्छी बात है। आप सुबह–सुबह अख़बार लेकर बैठ जाते हैं और जब तक एक–एक अक्षर नहीं पढ़ लेते उसे छोड़ते नहीं। आप ढेरों किताबें व पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ते हैं लेकिन क्या कभी विचार किया है कि क्या पठनीय है और क्या पठनीय नहीं है? एक समय था कुछ लोग जासूसी व तथाकथित सामाजिक उपन्यासों के दीवाने होते थे। आज भी होंगे। उनका काम था पढ़ना, पढ़ना और सिर्फ़ पढ़ना। समय व्यतीत करने के उद्देष्य से एक उद्देष्यहीन और निरर्थक क्रिया के रूप में। ये कर्म ही नहीं जीवन की वास्तविकता से पलायन मात्र है। कुछ लोग फिल्मों के इतने दीवाने होते थे कि चाहे जो हो जाए हर फिल्म का पहला षो देखना ही है। माना फिल्में मनोरंजन का अच्छा साधन हैं लेकिन फिल्में बनाना एक उद्योग है। कमाई का जरिया है। आप हैं कि एक ही थीम पर बनी दर्जनों नहीं उससे भी ज़्यादा फिल्में देखने के बाद भी सचेत नहीं होते। क्यों? क्या उद्देष्यपूर्ण और साहित्यिक कृतियों पर बनी अच्छी सभी फिल्में, जिनकी संख्या उँगलियों पर गिनने लायक़ है, देखीं आपने? क्या आपने श्रेश्ठ लेखकों की चुनिंदा रचनाएँ खोज कर उन्हें पढ़ने का प्रयास किया? यदि ये सब नहीं किया और अल्लम–गल्लम कुछ भी पढ़ते–देखते रहे तो आपने समय का सदुपयोग नहीं भयंकर दुरुपयोग किया है।

**Who does the Time Favour?**
**Those who move along with time, the time also favours them, and those who do not support the time, do not get along with it, they regret later on.**

**Saint Dr. Gurmeet Ram Rahim Singh Ji Insan**

जब तक आप पठनीय व अपठनीय में अंतर्भेद नहीं कर सकते, करने योग्य और त्यागने योग्य कार्य में अंतर्भेद नहीं कर सकते समय का सदुपयोग संभव ही नहीं। काम जो भी हो हर काम में समय लगता है। कुछ लोग काम भी ख़ूब करते हैं और कमाते भी ख़ूब ही हैं। एक ड्रग पेडलर भी सारे दिन काम में लगा रहता है। ड्रग्स बेचकर पैसा कमाता है। वह भी अपने ढंग से समय का सदुपयोग कर रहा है लेकिन उसकी कमाई, उसके समय का सदुपयोग समाज के लिए बहुत घातक है। अनेक लोग काला बाज़ारी अथवा तस्करी के कामों में ख़ूब कमा रहे हैं लेकिन क्या यह कमाई समाज व अर्थव्यवस्था के विकास में बाधक नहीं? क्या चोरी, ठगी, डकैती अथवा देह–व्यापार द्वारा कमाया गया पैसा नैतिक है? नहीं। कई बार मजबूरी के कारण भी हम ग़लत कार्य करने को विवष होते हैं। हमारे पास अच्छे कार्य करने का अवसर या विकल्प होता ही नहीं लेकिन इस आधार पर हमारे ग़लत कार्यों को समय का सदुपयोग तो नहीं कहा जा सकता।

यदि हम समय का दुरुपयोग अर्थात् कोई ग़लत कार्य करने को विवष हैं और हमें उस कार्य को छोड़ कर अन्य उचित कार्य करने का अवसर मिलता है तो हमें उस अवसर को कभी नहीं चूकना चाहिए। हमारे सामने अवसरों की रील चलती रहती है। हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम सचेत रहकर अपने सामने से गुज़रने वाली रील में से उत्तम दृष्य को रोक कर उसे

अपने जीवन की वास्तविकता बना डालें। रत्नाकर एक डाकू थे। समय के प्रभाव से उनके जीवन में एक ऐसा अवसर आया जब उनके विचारों में बदलाव आया। उन्होंने दस्युवृत्ति त्याग दी। महर्शि बाल्मीकि बनकर दुनिया के प्रथम महाकाव्य की रचना कर डाली। आदि कवि कहलाए। जीवनवृत्ति में सुधार कर यष प्राप्त किया। जीवन में अच्छे अवसरों की तलाष कर उन्हें अपना लेना, यही समय का सदुपयोग है। निरर्थक, उद्देष्यहीन, अप्राकृतिक, जन–विरोधी, राश्ट्र–विरोधी व प्रकृति–विरोधी अवांछित व अनैतिक कार्यों से विमुख होकर सार्थक, सोद्देष्य व राश्ट्र व समाज के हित में अपेक्षित नैतिक कार्यों में संलग्न होना ही समय का यथार्थ उपयोग है, सदुपयोग है।

✪☆✪

# हीरे की तरह क़ीमती बनने के लिए ज़रूरी है मनोभावों की तराश

**सीताराम गुप्ता**

हीरा बहुत क़ीमती होता है इसमें संदेह नहीं। पिछले दिनों जिनीवा में हुई एक नीलामी में गोलकुंडा की खानों से निकला 76 कैरेट का एक भारतीय हीरा एक अरब, अट्ठारह करोड़ रुपये में बिका। हीरा अनमोल होता है। गुणों से संपन्न व्यक्ति की तुलना भी कई बार हीरे से की जाती है। एक व्यक्ति भी हीरा ही होता है यदि उसमें हीरे की तरह कुछ गुण हों, कुछ उपयोगिता हो। वो कौन से गुण हैं जो एक व्यक्ति को हीरे की श्रेणी में ला देते हैं? यह जानने से पहले ये जानने का प्रयास करते हैं कि वो कौन से गुण हैं जो एक हीरे को अनमोल बना देते हैं।

हीरा एक अत्यंत क़ीमती पत्थर है जिसकी क़ीमत का निर्धारण अंग्रेज़ी लेटर 'सी' से प्रारंभ होने वाले तीन शब्दों से होता है। वो तीन शब्द हैं कट, क्लेरिटी और कलर। हीरे की तराश कैसी है, वह कितना साफ़ है तथा उसका रंग कैसा है इन्हीं तीन बातों पर हीरे की क़ीमत निर्भर करती है। खानों से निकला कच्चा हीरा अनिश्चित आकार का होता है। उसे आकर्षक आकार और चमक प्रदान करने के लिए तराशना पड़ता है। तभी वह अपेक्षित आभा बिखेर सकता है अन्यथा नहीं।

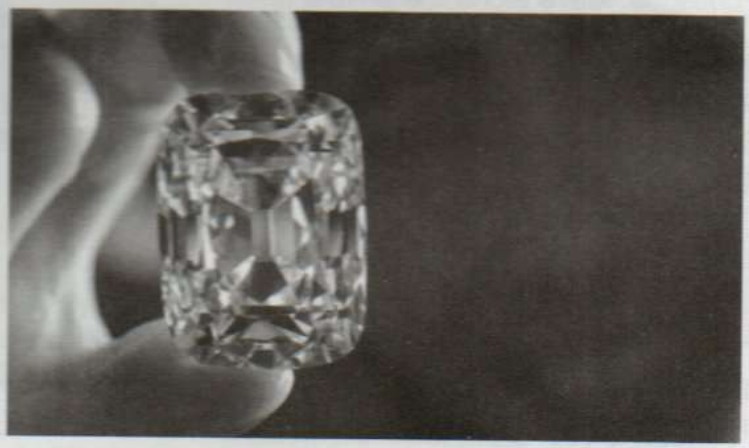

हीरों को तराशना कोई बच्चों का खेल नहीं। हीरे तराशना एक कला है। सही प्रकार से तराशे गए हीरों की ही बाज़ार में अच्छी क़ीमत मिलना संभव है। इसके अलावा हीरे की पारदर्शिता और रंग का भी उसकी क़ीमत के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है लेकिन हीरे की पारदर्शिता और रंग उसे तराशने के बाद ही उभर कर सामने आ पाते हैं। प्रष्न उठता है कि किसी मनुष्य को हीरे की तरह कैसे तराषा जाए कि वो भी हीरे की तरह ही अनमोल बन जाए।

एक मूर्तिकार से उसके एक प्रषंसक ने पूछा कि वह इतनी सुंदर मूर्तियाँ कैसे बना लेता है। मूर्तिकार ने जवाब दिया कि मूर्ति तो पत्थर में पहले से ही मौजूद होती है। मैं तो केवल मूर्ति के ऊपर लगे अतिरिक्त पत्थर को हटाकर साफ कर देता हूँ। ठीक यही स्थिति मनुश्य की भी होती है। मनुश्य स्वयं में ईष्वर की एक अद्भुत कलाकृति है। जब मनुश्य की सोच विकृत हो जाती है तब वह ईष्वरीय कलाकृति दब जाती है। अपनी सोच को सही दिषा अथवा सकारात्मकता प्रदान करके हम पुनः ईष्वरीय कलाकृति में बदल जाते हैं।

जिस प्रकार एक कलाकार उचित प्रषिक्षण और निरंतर अभ्यास के द्वारा मूर्ति के ऊपर लगे अतिरिक्त पत्थर को हटाकर साफ करके एक सुंदर कलाकृति बनाने में कुषलता प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार हम भी उचित प्रषिक्षण और निरंतर अभ्यास के द्वारा अपने नकारात्मक भावों से छुटकारा पाकर प्रभावषाली व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। नकारात्मक भावों से छुटकारा पाने का अर्थ है सकारात्मकता का विकास।

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेश, अभिनिवेषश क्रोद्व, लोभ मोह, अंहकार व मोह आदि क्लेषों की समाप्ति अथवा नकारात्मक भावों से छुटकारा ही व्यक्ति की वास्तविक तराष है। इससे व्यक्ति के मन में हिंसा की समाप्ति होकर करुणा और मैत्री का विकास होता है और तभी उसका ह्रदय संकीर्णता का त्याग कर विस्तृत होता है, अधिकाधिक संवेदनषील बनता है। उसमें पारदर्षिता आती है और वह आकर्शक लगने लगता है। यही पारदर्षिता और आकर्शण उसे समाज और राश्ट्र के लिए उपयोगी और हीरे से भी क़ीमती बना देता है इसमें संदेह नहीं। खास बात यह है कि हीरे को तराशने वाला तो कोई कलाकार होता है जब कि मनुष्य खुद ही स्वयं को तराश सकता है। उस को तराशने के लिए दूसरा कोई नहीं चाहिए।

**ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली - 110034 मोबा0 न0 9555622323**

# A big change is required in Country's Medical education system

## Excerpts from the talk delivered by Journalist Madhuli Trivedi. This includes writer's personal opinion as well

When I was a student, 90% of the students in the medical colleges used to be from poor families and the fee was less than Rs 100 per month. But today, there are hardly any students from the deprived section in medical education, factually they can't even dream. Reason they can't afford to p[ay a fee running into Rs 1 crore for a MBBS Course in the Government medical colleges, leave alone the private ones where the fee is more than Rs 2 crores for the course.

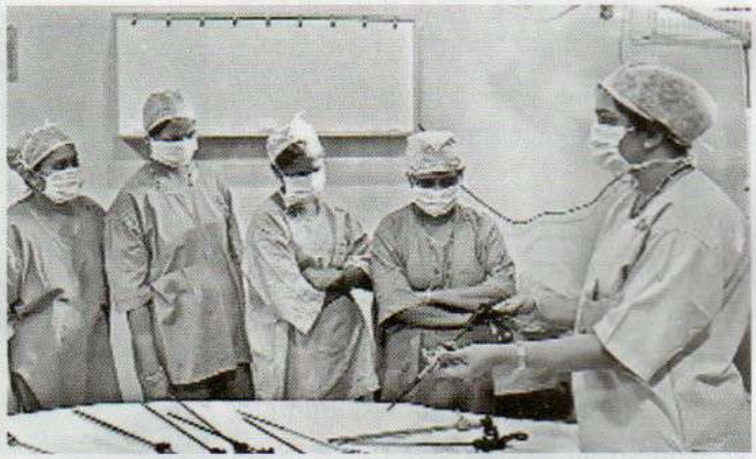

There is a powerful body working to ensure that medical education is only for the elitist class. Things have aggravated in the last 10 years rather than improving under our PM who boasts of a humble Chaiwala background.

How it has been allowed to come to such a sorry pass. First, in India it takes almost Rs 400 Crore to build a medical college whereas in Caribbean countries, a medical college is run on a 50000 sq feet rented space in a Shopping mall. And mind you, they are training the crop of doctors who work in a highly developed country like the United States. One may question our Country's Medical education body--what is the need of this edifice running into hundred of crores when you can very well manage in a rented space..

In India, any Medical college must have a highly qualified faculty of 140 Doctor teachers to train 100 students, whereas in other countries 140 faculty members train no less than 1000 doctors. This is happening because while the entire world is changing, we resist change. In 2014 I saw hundreds of Indian students in Shanghai, pursuing medicine. I was shocked when

they told me that their total expenditure including hostel and food in five years was about rs 20 lacs. If you tell the same thing in India, they say that China's standard of education is very poor. They forgot that while hardly one Indian University like IIT Bombay figures in the top 150 Universities of the world, China has about 15. One may ask them how with the low standard of education they have become leaders in chip semiconductor and lithium battery manufacturing,the fields in which India is struggling even to make any headway. This is all political propaganda at the behest of one person in India.

**Consequences**

Indeed, dreadful! While 90% of doctors around the world are from poor families who have the background and compassion to treat the poor, we will have doctors from the most privileged class who may even avoid touching the patient. And this is happening.

Yes, BJP is right when it says that we have started many medical colleges but they avoid adding that now medical education is for the elite class only.

A nursing student spends about rs 5 lacs on the course but gets to know the practical aspects when she joins a hospital on a salary which is many times not even Rs 15000 PM and she happily opts so that she gets some experience.

**Conclusion**

This country doesn't need additional funds allocation for health education but it needs drastic reforms in tune with the present time

✪☆✪

# Getting interested in others is a way to be happy

**Neela Sood**

He was in mid thirties and would often come to me to share his family problems. His family comprised of a loving wife and two loving children. One day when we had finished our official work he confided, "Sir, I'm plagued by a serious problem which has taken away the peace of our family." Finding my silent nod he continued "Our next door neighbor is a middle aged childless couple. They watch their TV with voice at full volume. Since the drawing rooms of our respective houses have a common wall this demeanor which now has become a practice, disturbs the studies of my small children. The lady of the house, though a teacher in top public school, is not prepared to pay any heed to my wife's frantic appeals and it has become a standoff between the two. Her husband lives in his own world and is not prepared to buy the displeasure of his wife."
"O.K. Give me some time" I said and we called it a day.

Next day I called him in my chamber and suggested "Today, when you go back to your home, ask your school going daughter to go to the lady in your neighbour with a request her for some help in her studies" Hardly a month had passed when he came to me with a beaming face, "Sir, your suggestion worked wonders. Now everyday she invites my both the children and helps them in studies. Not only this, she and my wife spend lot of time chatting and all of a sudden she is a wonderful lady in the eyes of my wife,"
The art of getting along with people and the ability to win friends has repeatedly proved to be a major contributing factor to the success of legendary men. Some are naturally endowed with superior social intelligence others have to learn and it is never too difficult. A few simple approaches that make us people friendly are--- Getting interested in others, talking less about ourselves, encouraging others to talk, listening better, seeing the good in everyone, thinking of win-win outcomes in our dealings with all and the openness to give ample credit and appreciation to others are the ground rules in developing social intelligence. Besides getting us friends, this approach will eventually make us wise as well.

# धर्म से अलग हुआ व्यक्ति पशुओं से भी अधिक गिर जाता है

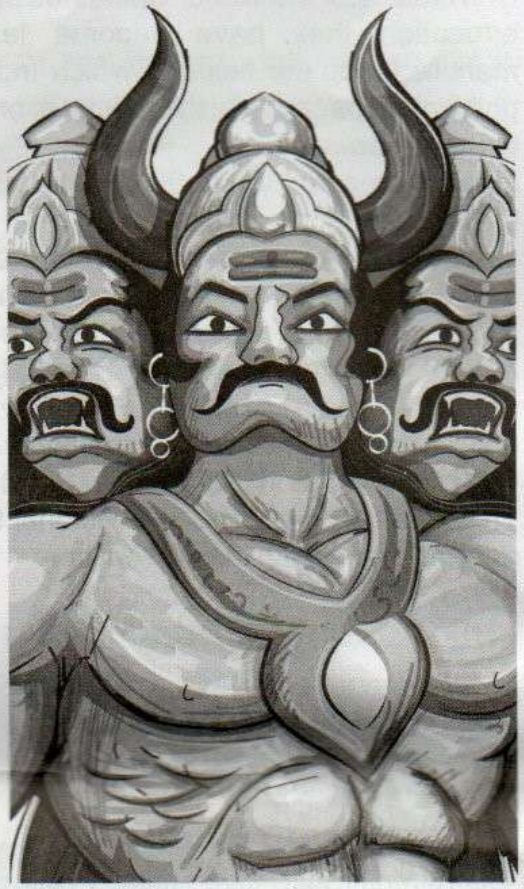

मनुष्य को सभी प्राणीयों में सब से अधिक बुद्धिमान माना जाता है क्योंकि वह मननशील होता है। पर वही मनुष्य जब धर्म को त्याग देता है तो वह पशुओं से भी अधिक गिर जाता है जैसे इस छोटी सी कहानी से सिद्ध होता है।

एक शिकारी अपनी बंदूक को मचान में छोड़ कर टहल रहा था तभी एक शेर उसे देख लेता है और उसके पीछे भागता है। शिकारी बचने के लिये भागता है और काफी भागने के बाद बचने के लिये एक बृक्ष के उपर चड़ जाता है। कुछ सकून मिलने के बाद जैसे ही वह उपर की और देखता है तो वहां बृक्ष के उपर उसे भालू बैठा नज़र आता है। शिकारी भालू को देखकर उसके आगे गिड़गड़ाता है———मेरे प्राण न लो, मैं अपने परिवार में अकेला कमाने वाला हूं।

नीचे शेर शिकारी का ईन्तजार कर रहा था। उसे बहुत भूख लगी थी और वह शिकारी को खा कर अपनी भूख शांत करने के लिये आतुर था। जब काफी समय तक शिकारी नीचे नहीं आया तो शेर ने भालू से कहा कि वह शिकारी को नीचे धकेल दे ताकी वह वह उसे खा सके। भालू ने यह कह कर धक्का देने से ईनकार कर दिया कि शिकारी उसका महमान है और वह महमान के साथ ऐसा नहीं कर सकता। परन्तु शेर वहां से गया नहीं और वहीं शिकारी का इन्तज़ार करता रहा। कुछ देर बाद भालू को नींद आ गई और वह गहरी नींद मे सो गया।

जब शेर ने भालू को सोये हुये देखा तो शिकारी से बोला———हे मानव, मैं बहुत भूखा हू, मैं यहां से तभीं जांउगा जब मेरी भूख शांत हो जायेगी। इस भालू पर विश्वास न करो, कुछ देर बाद इसकी भूख असहनीय हो जायेगी और यह तुम्हे खा जायेगा। जहां तक मेरा प्रश्न है मुझे बहुत जोर की भूख लगी है मुझे कोई फर्क नहीं, चाहे तुम मेरा भोजन बनो या फिर यह भालू। जैसे ही मेरी भूख शांत होगी है मैं यहां से चला जाउंगा। भालू नींद में है, इसे धक्का मार दो, मेरा विश्वास करो मैं इसे खा कर यहां से चला जांउगां, और तुम बच जाओगे। पर मानव तो पशुओं से भी अधिक स्वार्थी हो सकता है। उसने सोचा कि शेर से बचने का यही उपाय हैं और कृतधंनता की सभी सीमायें पार करते हुये, उसने उसी भालू को नीचे धक्का मार दिया जिसने की उसके प्राणों की रक्षा की थी। परन्तु भाग्य ने भालू का साथ दिया और नीचे गिरते उसने एक टहनी को पकड़ लिया। वह चड़ कर फिर उपर आ गया और शेर से अपनी जान बचा ली।

जब शेर ने यह सब देखा जो भालू से बोला———भालू सुनो, आदमी पर कभी विश्वास न करो। तुमने तो इस शिकारी को पनाह देकर इस की जान बचाई और यह तुम्हें ही मोत के मूंह में डाल रहा था। इस लिये अब देर न करो और शिकारी को धक्का दे कर मेरे पास पहुंचा दो। मैं इसे उचित इनाम दूंगा।

पर भालू बोला———हे शेर, मैने तो अपना कर्तव्य निभाया । मैने इसे बचाया तो ईश्वर ने मुझे बचा दिया। हम सभी को अपने कर्मो का फल मिल जाता है। मैं इसे बदले की भावना से नुकसान नहीं पहुंचाउंगा । इसे अपने किये का फल खुद व खुद मिलेगां

यह बात इस बात को सिद्व करती है कि मनुष्य जब धर्म को त्याग देता है तो वह पशुओं से भी अधिक गिर जाता है, इसलिये मनुष्य को किसी भी हालत में धर्म के गुणो की अबेहलना नहीं करनी चाहिये।

पत्रिका मे दिए गए विचार लेखकों के अपने है इसमें आप लेखक से सिधा सम्पर्क करें। कानूनी कारवाई के लिए चण्डीगढ़ के न्यायालय मान्य है

# माता-पिता

अनूप कुमार श्रीवास्तव

माता–पिता सबसे पवित्र, निष्पक्ष, निस्वार्थ रिश्ता है जिसमें केवल प्यार, अपनापन और त्याग

की भावना निहित होती है, जैसा कि समाज में प्रचलित शब्दों माता पिता, सीता राम, सिया राम, लक्ष्मी गणेश आदि नामों से स्पष्ट हो जाता है कि समाज में स्त्री का स्थान पहला है, स्त्री सम्मानित है, उसके बाद पुरुष का स्थान माना जाता है।

अगर कोई व्यक्ति केवल अपने जीवन काल पर गौर करे तो स्पष्ट हो जाएगा कि मां का प्यार,

दुनिया के किसी रिश्ते के प्यार से नौ माह ज्यादा है। मां ने हमें जन्म देने के लिए कई महीनों तक अपनी इच्छा को हमारी खुशी के लिए त्याग दिया होगा। मां ही उस असहनीय दर्द के साथ हमें जन्म देकर मुस्कुराई होगी। हमारे पालन पोषण में मां का योगदान अतुल्य है। जितना प्यार मां की गोद में बचपन में मिला होगा, उतना पिता के कंधे पर न मिला होगा। मां ने तो कई बार अपना भोजन किए बिना, हमारे भोजन का इंतज़ाम किया होगा।

मगर पिता का स्थान मां के बाद सर्वोच्च होता है, जिसके अति सूक्ष्म योगदान, हमारे साकार होने कि नींव बनी। हमारे इस पृथ्वी पर पदार्पण से लेकर अपने पूरे जीवनकाल तक, हमेशा माता–पिता अपने बच्चों की हर इच्छा पूरी करने से लेकर उनके स्वास्थ्य, अच्छी पढ़ाई लिखाई, नौकरी, फिर शादी ब्याह की तैयारियों में हमेशा व्यस्त रहते हैं। यूँ कहें कि बच्चों के जन्म के बाद से माता पिता की हर सोच, हर कार्य, हर विचार विमर्श अपने बच्चों के इर्द गिर्द घूमती रहती है। शायद माता पिता को अपने खाने पीने का शौक, मनोरंजन, फैशन, घूमने फिरने की सोचने का भी समय नहीं मिलता, या बच्चों को घूमने, खिलाने, खुश रखने में व उनका भविष्य बनाने की जुगत में अपनी सभी चीजों को २०–२५ सालो तक टालते रहते हुए माता–पिता का आधे से अधिक जीवन निकल जाता हैं। और तब तक नौकरी से सेवा निवृत्त होने का समय आ जाता है। मैं सभी को याद दिलाना चाहता हूं कि इस जीवन के अच्छे कर्मों का फल इसी जीवन में अवश्य मिलेगा। अतः हर व्यक्ति स्वतः सही रास्ते पर चलें, सही कार्य करें, सही परामर्श दें, सही मार्गदर्शन करें, परन्तु केवल इतना बोल देना अधूरा ही रह जाएगा

और भ्रम भी पैदा करेगा कि सही क्या है, गलत क्या है। सही और गलत एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

इस संदर्भ में एक सीधा फॉर्मूला मेरे संज्ञान में आता है कि "आप कुछ भी बोलने अथवा कुछ करने से पहले आप एक पल आंख बंद करके सोचें कि क्या आप अपनी मां यदि जीवित होती तो उनके सामने इन शब्दों को बोलने पर या इस कार्य को मां के

सामने करने पर, अगर आपकी मां खुश होती, तो उन शब्दों का उपयोग या वह कार्य आपके लिए सही है, आप उन शब्दों का प्रयोग या पह कार्य खुलकर सभी के सामने कर सकते है। अगर आपकी मां नाखुश होती, तो ये आपके लिए गलत है।"

इस पृथ्वी पर सभी लोगों को किसी मां ने जन्म दिया है और सभी जानते हैं कि उनकी मां कब खुश होती, कब नाराज़ होती। रही माता–पिता के बुरे होने की बात, जो समाज के कुछ लोग कहते सुने जाते है, वे केवल अज्ञानी हैं, अपनी मूर्खता का परिचय देते है, उनकी सोच बुरी हो सकती हैं, पर माता–पिता कभी ग़लत हो ही नहीं सकते। बाद में आर्थिक हालात या परिस्थितियां बदलने पर माता पिता के निर्णय को गलत कहना अनुचित होगा। आप सौभाग्यशाली हैं कि माता–पिता के सौजन्य से आप इस पृथ्वी के आकर्षण को देख पा रहे हैं। आप सन्तान होने के कारण माता पिता के संघर्ष के दिनों के हालात की कल्पना भी नहीं कर

सकते। हां, आप अपनी वर्तमान आर्थिक परिस्थिति एवम् सामाजिक सुविधाओं के सापेक्ष अपने बच्चों के लिए जुटा पाने वाली सुख सुविधाएं का आकलन कर सकते हैं कि क्या आप अपने बच्चों को वांछित स्तर पर ला सके हैं, जिसके सपने आपने देखे हैं? याद रखिए कि माता–पिता आपके साथ सीमित समय के लिए ही हैं, हमेशा नहीं मिलेंगे।

अतः उन्हें सबके सामने, मुख्य रूप से अपने बच्चों के सामने उचित आदर सत्कार दें, क्योंकि आपके बच्चे बताने से अधिक, देखकर सीखते हैं। आपके बच्चे बड़े होकर आपके साथ वहीं बर्ताव करेंगे, जो आपने अपने बड़ों के साथ किया होगा। अच्छे संस्कारों का पालन करते–करते आदत हो जाती हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। इसलिए वर्तमान पीढ़ी को चाहिए कि अपने माता पिता के छोटे–छोटे पर्सनल कार्यों में हाथ बँटायें, कभी फुरसत में उनके साथ बैठकर बातें करें, उनके मन की बात और आवश्यकताओं को जानने की कोशिश करें, कभी उन्हें अपने हाथों से एक निवाला खिलायें, घर में या बाहर हाथों से सहारा दें, कभी उनके सामने उनकी तारीफ करें, उनके स्वास्थ्य की चिन्ता करें और अपने दैनिक कार्यों से समय निकालकर माता–पिता के प्रति स्नेह, आभार, सत्कार, मनोरंजन, सहारा देने का प्रयास करें।

# पिछले 10 वर्षो में धार्मिक स्थलों की सफाई में असाधारण प्रगती हुई है, इसका श्रेय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को जाता है।

नीला सूद

ऋषि पतंजली ने जीवन को आन्नदमय बनाकर समाधी अर्थात मोक्ष तक पहुंचने के लिये पांच 'यम'—— सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, ब्रहम्चर्य, अपरिग्रह–उतना ही पास रखना जितना चाहिये अर्थात जरूरत ये अधिक संग्रह न करना व पांच 'नियम'—— शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर को सर्मपण बतायें हैं

इन में शौच भी एक है। शौच का अर्थ है स्वच्छता न केवल अपनी स्वच्छता बल्कि आसपास के वातावरण की स्वच्छता भी। इस में कोई संदेह नहीं कि हम भारत के लोगों के लिए धर्म, उसका चाहे कोई भी स्वरूप हो, जीवन का मुख्य विषय रहा है । परन्तु स्वच्छता, खासकर आसपास के वातावरण की स्वच्छता का स्थान बिल्कुल नही था । हमारे धार्मिक स्थल अक्सर गन्दे ही हुआ करते थे। यह महात्मा गाान्धी के जीवन की निम्न घटना पढने के बाद यह स्पष्ट है।

1903 में महात्मा गाान्धी पहली बार बनारस जिसे काशी कहा जाता है गये। हिन्दु होने के कारण यह स्वभाविक था कि वह काशी विश्वनाथ के मन्दिर भी गये। जो उन्होने वहां देखा उस से प्रभावित होना तो दूर की बात है उन के मन को बहुत दुख हुआ। चारों और मक्खियों की भरमार थी। वहां पर इतना शोर था जो कि असहनिय था। जब कि भगवान के घर में शान्त वातावरण का होना आवश्यक है वहां सब इसके विपरीत था। वह मन्दिर के अन्दर गये तो सड़े हुये फूलों की बदबू के कारण उन्हे वहां खड़ा होना मुश्किल हो रहा था । फर्श जगह जगह से टूटा हुआ था। वह मन्दिर के चारों और घूमें पर उन्हें नहीं लगा कि ऐसे स्थान पर भगवान रहता होगा या फिर ईश्वर के दर्शन हो सकतें हैं। वह बहुत निराश होकर वहां सं लोटे।

इस के ठीक 13 साल बाद फिर महात्मा गान्धी को बनारस जाने का अवसर मिला। उन्हें बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के उदघाटन समारोह में बुलाया हुआ था। कई राजा माहाराजा और कांग्रसी नेता वहां माजूद थे। पर गाांधी जी को उस समय अधिक लोग न तो जानते थे और न ही भारतीय रातनीती में उनका वह सर्वोच स्थान था जो कि बाद में बना। गांधी जी उस से एक दिन पहले ही काशी विश्वनाथ मन्दिर जाकर आये थे और वहां की हालत वैसे ही थी जो उन्होने 13 साल पहले देखी थी।

मुख्य वक्ताओं के बोलने के बाद गांधी जी की बारी आई। जो वे बोले उसका सारांश इस प्रकार है———— "ज़ाहिर है आपने इस उदघाटन सामारोह को आलीशान बनाने में बहुत धन और पैसा खर्च किया है। यह हिन्दुओं के लिये गौरव की बात है। मैं हिन्दु होने के नाते आपसे पूछता हूं कि क्या आपने कभी काशी विश्वनाथ मन्दिर जाकर वहां का हाल देखा है। यदि कोई व्यक्ति बाहर देश से वहां जाये तो वह हम हिन्दुओं के बारे में क्या राये बनायेगा? यदि वह हम को धृणित होकर देखे तो मैं नहीं समझता उसकी कोई गलती होगी। हर जगह गन्दगी, बदबू, मक्खियां और तंग गलियां देखकर मैं नहीं समझता कि कोई विदेशी हमें स्वराज के योग्य पायेगा, जिसके लिये हम संघर्ष में लगे हुये हैं। जो व्यक्ति अपने भगवान के घर को इतना गन्दा रखते हो मैं नहीं समझता वह अपने देश को अच्छा रख सकते है।

यह पहली वार थी कि किसी नेता ने ऐसी स्पष्ट बात की हो। वहो पर माजूद सभी नेता गाधी जी से खफा थे और नतीजा यह हुआ कि मदन मोहन मालविय और ऐनी बसन्त ने उन्हे आगे नहीं बोलने दिया और बिठा दिया । जो राजे महाराजा वहां आये वे सब गांधीं जी की बात से इतना क्षुब्ध हुये कि उठ कर चल दिये।

2014 में जब श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमन्त्री अने तब इस बात को ठीक 100 वर्ष हो गये थें। इस बीच यहां से अंग्रेज़ चले गये, महात्मा गाधीं जिन्हें बापू कहा जाता है और जिन के नाम पर भारत की मुश्य राजनैतिक पार्टी 60 वर्ष तक शासन करती रही, भी नहीं रहे। हमारे देश के शासन की डोर अधिकतर ऐसे व्यक्तियों के हाथ में रही जो विदेशों में रहे या वहां से शिक्षा प्राप्त कर के आये, जहां कि अपनी और वातावरण की सफाई को बहुत महत्व दिया जाता है। पर किसी ने भी धार्मिक स्थलों पर सफाई के मुददे को नहीं छूआा। परिणाम काशी विश्वनाथ मन्दिर और अधिकतर दूसरे हिन्दु मन्दिरों की सफाई के बारे में हालत वैसी ही रही जैसे 100 वर्ष पहले थी। नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमन्त्री बनने के बाद बहुत सही कहा कि हमारे देश को मन्दिर नहीं शौचालय चाहिय। उन्होने सफाई के क्ेत्रा में अभूतपूर्व कार्य किसा व करने की प्रेरणा दी। परिणाम बस के सामने हैं। आज काशी विश्वनाथ मन्दिर ही नहीं अपितु हिन्दु